International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 2, Mar.-Apr,, 2025

भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

गणेश गिरी[1], डॉ गजदीप कुमार आर्या[2]

[1]**शोधार्थी** राजनीति विज्ञान, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा
[2]अतिथि व्याख्याता इतिहास विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, चंपावत परिसर

शोध सार

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा संस्कृति के उस संकल्पना से परिभाषितहोती है, जिसके अनुसार संस्कृति बुद्धि, अथवा ज्ञान की वह शाश्वत् परम्परा है,जो हमें मानव व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करातीहै। यह संस्कृति के आधुनिक परिभाषा के विपरीत इन्द्रीयतीत अथवा तार्किक ज्ञानका वह स्त्रोत है, जिनमें बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त और वैष्णव मत इत्यादि आते हैं।साथ ही आगम के अंतर्गत ही पंथ निरपेक्ष ज्ञान की शाखाओं जैसे– व्याकरण,दण्डनीति, शिल्पशास्त्र, आयुर्वेद और कामशास्त्र को भी परिभाषित किया गया है।सभी शास्त्रों (निगम) को प्रमाण के परे ईश्वरीय उद्‌बोधन स्वरूप माना गया हैं।जो प्रश्न और तर्क के परे है। परन्तु तार्किक रूप में उनकी व्याख्या की जा सकती है,

प्रस्तावना

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा निगमों से निसृत होती है, तथा आगमों के माध्यम् से विभिन्न कसौटियों पर परीक्षण के माध्यम से विस्तृत और परिपुष्ठ होतीहैं। यह किंचित मूल प्रश्नों यथा मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मेरा गन्तव्य क्या हैं? ईश्वर और प्रकृति, लौकिक एवं पारलौकिक जीवन, मृत्यु और मोक्ष, पाप एव ंपुण्य, साध्य एवं साधन, इत्यादि गूढ़ प्रश्नों पर विस्तृत मनन् के माध्यम् से सम्पोषित हुई है। मनुष्य के ऐतिहासिक व्यक्त्वि के अतिरिक्त उसकी परामानवीयपहचान की विचारधारा को भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया है।

यह परामानवीय पहचान ही उसकी सत्य पहचान हैं। यह मूलतः आध्यात्म की उस यात्रा का आरंभहै जिसमें सत्य अथवा ईश्वर की खोज अंतिम गन्तव्य हैं। यह यात्रा एक साधना है अथवा स्वयं से स्वयं की पहचान है। वह व्यक्ति जो इस यात्रा पर अग्रसर होता हैवह साधक हैं, ऐसे साधक को ही आर्य अथवा श्रेष्ठ कहा जाता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति वस्तुतः आर्य धर्म है। यह सामाजिक आचार संहिता का आधार है। जो संस्कृति के भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्षों को समाहित करताहै। भारतीय संस्कृति का यह स्वरूप वेदों में उद्‌घाटित होकर उपनिषदों तकपरिष्कृत होता रहा। वेदों को समस्त ज्ञान का मूल माना गया। स्वयं ब्रह्मा के मुखसे उद्‌भूत माना जाने के कारण इसे ईश्वरीय एवं अपौरूषेय कहा गया, हालांकि वेदों के आधुनिक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वेदों का संकलन कियागया। कई

ऋषि एवं परिवारों ने ऋगवेद की विभिन्न सूक्तों की रचना की है। वेदोंमें प्रयुक्त संस्कृत भाषा पाणिनीय व्याकरण के नियमों के पहले की भाषा है। जिसमें शब्दों का अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है। 14 वीं शताब्दी ई० में सायण नेजब वेदों का भाष्य सहित पूर्ण संकलन किया, तो वैदिक सूक्तों के विषय में लिखाहैं कि इनका अर्थ वैदिक कर्मकांड के संदर्भ में ही समझा जा सकता हैं। वेदोंत्तरकाल में भी वेदों को मौखिक रूप से स्मरण करने तथा वाचन करने पर ही अधिकबल दिया जाता रहा। याष्क के निरूक्त एपुरूषीय और मीमांसा ग्रंथों में वैदिक संहिताओं के मनन करने और वाचन करने पर ही बल दिया गया। उनकी अर्थ कीव्याख्या करने पर नहीं। वेदों को विश्लेषक परिपेक्ष में समझने का पहला प्रयास 19वीं सदी में तब किया गया, जब ऋगवेद संहिता पर सायण की टीका का प्रकाशन मैक्समूलर महोदय ने किया।

वेंदो से लेकर उपनिषदों तक प्रवृत्तिवाद से लेकर निवृत्तिवाद तक सभीदार्शनिक विचारधाराओं को संपादित करने का प्रयास किया गया है। बहुदेववाद, अधिदेववाद, और एकेश्वरवाद सभी की झलक स्वयं ऋगवेद में चिन्हित की जासकती हैः– हालांकि वेदों में बीज रूप में वर्णित विभिन्न दार्शनिक संकल्पनाओं का सुस्पष्ट एवं विस्तृत स्वरूप विभिन्न उपनिषदों में मिलता है। उपनिषद को वेन्दांतभी कहा गया है। हालांकि ये पौरूषेय है, तथापि वैदिक दर्शन के चरम व्याख्याहोने के कारण इन्हें वैदिक वांगमय् का भाग माना जाता है। दर्शन के पूर्ण विषयोंका प्रतिपादन उपनिषदों में होने के कारण जर्मन विद्वान सोपेन हॉवर ने उपनिषदोंको पूर्वी दर्शन के विकास का चरम बिंदु माना है।आज यह राजनीति के केन्द्र–बिन्दु के इतर समाज का दर्पण बन गया है सामजिक संरचना, इसके निवासियों की जीवन शैली, उनका सुख–दुख, आचार–विचार, आदि इसके कारक बने हैं। आज का इतिहास लेखन समाजकेन्द्रित हो गया है जहाँ साधारण जनता महत्वपूर्ण है। जिसके श्रम पर हमारीसभ्यता–संस्कृति का दावेदार है। इस दृष्टिकोण से वेदों से पुराणों तक संस्कृति केविविध पहलूओं का अपना विशेष महत्व है। किसी भी देश की दिशा और दशा वहाँकी सांस्कृतिक परम्परा पर निर्भर करती है और सामाजिक स्थिति व गतिविधियोंतो पूरी तरह से वहाँ की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। वस्तुतः संस्कृति मानवजीवन में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन।इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग–युगान्तर में संस्कृति निर्मितहोती है।

भारतीय संस्कृति यहाँ की मनोदशा और सामाजिक संबंधो में यह बात बहुतअच्छी तरह से देखा जा सकता है। इसलिए कहा भी गया है कि संस्कृति मनुष्यका समस्त सीखा हुआ व्यवहार है, अर्थात् वे चीजों जो मनुष्य के पास हैं, वे चीजेंजो वे करते है और वह सब जो वे सोचते है, संस्कृति है। गौर करे तो भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है।

अन्य देशों की संस्कृतियों तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही है, किन्तु भारतीय संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तोकिया है, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है।

तभी तो पाश्चात्यविद्वान अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु भारतीय संस्कृति को पहले समझनेका परामर्श देते हैं। संस्कृति का निर्माण जिन छोटी–बड़ी बहुत सी इकाईयों से होती है,

निष्कर्ष

संस्कृति तत्व व्यवहार का रूप या इस व्यवहार से उत्पन्न एक भौतिक वस्तु है, जिसे सांस्कृतिक व्यवहार की सबसे छोटी इकाई माना जाता है। यह उनईटों के समान हैं, जिनके द्वारा सम्पूर्ण समाज की संस्कृति का निर्माण होता है।इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भौतिक–अभौतिक क्षेत्र में संस्कृति तत्व उनसभी वस्तुओं, जिसका का कार्यात्मक दृष्टिकोण से और अधिक विभाजन नहीं किया जा सकता। संस्कृति तत्व में परिवर्त्तन तथा गतिशीलता भी पाई जाती है।

लेकिन केवल अकेला संस्कृति तत्व मनुष्य की किसी आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम नहीं होता। जब अनेक संस्कृति तत्व परस्पर उद्देश्यपूर्ण तरीके से संयुक्त होजाते है, तब ही वे मनुष्य की किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति कर पाते है। संस्कृति समग्रः जब अनेक संस्कृति तत्व व्यवस्थित रूप से संयुक्त होकर मनुष्य की किसी आवश्यकताओं की पूर्ति करते है, तब संस्कृति तत्वों के संयुक्त रूप को संस्कृति समग्र कहा जाता है। इस तरह संस्कृति समग्र परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित संस्कृति तत्वों का एक जाल है। संस्कृति समग्र अनेक संस्कृति तत्वों कीवह सम्पूर्णता है, जो अर्थपूर्ण सम्बन्धों द्वारा परस्पर समावेष्टित रहते है। इस प्रकार संस्कृति समग्र संस्कृति तत्वों का एक पुंज होती है, जो कि अनेक सांस्कृतिक नियमों के अनुसार व्यवस्थित होती है और इसका निर्माण करने वाले सभी परस्पर सम्बन्धित होते है।

सन्दर्भ सूची

[1]. कठोपनिषदःगीता प्रेस गोरखपुर, 1992 प्रथम संस्करण।
[2]. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र, फाउडेशन्स ऑफ इंडियन कल्चर वाल्यूम–1, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1995, पृ.–7
[3]. मैक्स, मुलर एफ, ऋगवेदः संहिता, और पद टेक्स्ट सायण कांडिका सहित (द्वितीय संस्करण) 1890–92
[4]. कीथ ए0 बी0, वैदिक इण्डेक्स, लंदन/रिलिजिन एण्ड फिलोस्पी ऑफ द
[5]. वेदाएण्ड उपनिषद, कैम्ब्रिज 1925.
[6]. ओलडेन बर्ग, ऋगवेद, बर्लिन, जर्मन, 1905.
[7]. मेंकडोनल ए0 ए0, वैदिक इण्डेक्स, लंदन.
[8]. ब्लूम फील्ड एम0, द रिलिजन ऑफ द वेदा, न्यूर्याक, 1908
[9]. डॉ0 मंगलदेव शास्त्री, भारतीय संस्कृति का विकास वैदिक धारा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2003, पृ. 53.